INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की प्रासंगिकता एवं सीमाएँ: आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के संदर्भ में एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्लेटो के न्याय सिद्धांत का विश्लेषण आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के संदर्भ में किया गया है। प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध कृति रिपब्लिक (The Republic) में न्याय को व्यक्ति की आत्मा तथा राज्य के विभिन्न वर्गों के मध्य सामंजस्य, कर्तव्यपालन और उचित कार्य-विभाजन के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि राज्य का संचालन ज्ञान, विवेक और नैतिकता से संपन्न व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण आधुनिक लोकतंत्र में सुशासन, उत्तरदायित्व, नैतिक नेतृत्व और सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। तथापि, प्लेटो की वर्ग-आधारित सामाजिक संरचना, दार्शनिक शासक की अवधारणा तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर सीमित बल आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ तनाव उत्पन्न करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से प्लेटो के न्याय सिद्धांत की मूल मान्यताओं, उसकी समकालीन प्रासंगिकता तथा वैचारिक सीमाओं का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत नैतिक शासन और सार्वजनिक हित के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है, किंतु उसका आधुनिक लोकतंत्र में प्रयोग समानता, स्वतंत्रता, बहुलवाद और संवैधानिक उत्तरदायित्व के अनुरूप संशोधन के बाद ही उचित है।

मुख्य शब्द: प्लेटो, न्याय सिद्धांत, आधुनिक लोकतंत्र, दार्शनिक शासक, सामाजिक न्याय, राजनीतिक नैतिकता, स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

राजनीतिक दर्शन के इतिहास में न्याय की अवधारणा राज्य की प्रकृति, राजनीतिक सत्ता की वैधता तथा व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंधों को समझने का एक केंद्रीय आधार रही है। न्याय केवल कानूनों के निर्माण और उनके पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भी निर्धारित करता है कि समाज में अधिकारों, कर्तव्यों, अवसरों और संसाधनों का वितरण किस प्रकार किया जाना चाहिए। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की वास्तविक सफलता इस बात से निर्धारित होती है कि वह सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ नागरिकों के हितों, स्वतंत्रता और समानता की रक्षा किस सीमा तक करती है। इसी व्यापक संदर्भ में प्लेटो का न्याय सिद्धांत राजनीतिक चिंतन की एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक उपलब्धि के रूप में सामने आता है। प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध कृति रिपब्लिक (The Republic) में न्याय की समस्या का व्यवस्थित विवेचन प्रस्तुत किया। उनके लिए न्याय केवल व्यक्तिगत सदाचार अथवा सामाजिक अनुशासन का विषय नहीं था, बल्कि व्यक्ति के नैतिक विकास और राज्य की आदर्श संरचना के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाला सिद्धांत था। प्लेटो ने यह समझने का प्रयास किया कि न्यायपूर्ण व्यक्ति के निर्माण के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है और राज्य की राजनीतिक एवं सामाजिक

व्यवस्था को किस प्रकार संगठित किया जाना चाहिए, जिससे समग्र समाज का कल्याण सुनिश्चित हो सके। उनके अनुसार, न्यायपूर्ण व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति और योग्यता के अनुरूप कार्य करता है तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न अंग परस्पर समन्वय के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। इस प्रकार, प्लेटो ने न्याय को व्यक्ति और राज्य दोनों की आंतरिक सुव्यवस्था से संबद्ध किया। प्लेटो के न्याय संबंधी विचारों को समझने के लिए उनकी समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर ध्यान देना आवश्यक है। एथेंस की राजनीतिक अस्थिरता, लोकतांत्रिक शासन की कार्यप्रणाली तथा उनके गुरु सुकरात को मृत्युदंड दिए जाने की घटना ने प्लेटो के राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने अनुभव किया कि राजनीतिक निर्णय केवल बहुमत की इच्छा या लोकप्रियता के आधार पर लिए जाने पर विवेक, ज्ञान और न्याय की उपेक्षा होने की आशंका बनी रहती है। इसी कारण उन्होंने शासन में दार्शनिक ज्ञान, नैतिक चरित्र और दूरदर्शिता को विशेष महत्त्व दिया। उनके विचार में राज्य का संचालन ऐसे व्यक्तियों द्वारा होना चाहिए, जो व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर सार्वजनिक हित को समझने और उसके अनुरूप निर्णय लेने में सक्षम हों। यद्यपि उनकी लोकतंत्र संबंधी आलोचना अपने समय की विशिष्ट परिस्थितियों में विकसित हुई थी, फिर भी राजनीतिक नेतृत्व की योग्यता, जनमत की सीमाओं और सत्ता के नैतिक उपयोग से संबंधित उनके प्रश्न राजनीतिक दर्शन में आज भी विचारणीय हैं।

प्लेटो के न्याय सिद्धांत का एक प्रमुख आधार व्यक्ति और राज्य के बीच स्थापित संबंध है। उन्होंने व्यक्ति की आत्मा के विवेक, उत्साह और इच्छाओं से संबंधित पक्षों तथा राज्य के शासक, रक्षक और उत्पादक वर्गों के बीच समानता स्थापित की। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में विवेकपूर्ण नियंत्रण और विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों के बीच संतुलन आवश्यक है, उसी प्रकार राज्य में विभिन्न वर्गों के बीच उचित कार्य-विभाजन और समन्वय को न्याय की शर्त माना गया। इस दृष्टिकोण में न्याय का अर्थ सभी व्यक्तियों को समान कार्य सौंपना नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग द्वारा अपने निर्धारित दायित्व का समुचित निर्वहन करना है। यही विचार प्लेटो के सिद्धांत को विशिष्टता प्रदान करता है। साथ ही, यह प्रश्न भी उत्पन्न करता है कि क्या सामाजिक व्यवस्था में निर्धारित भूमिकाओं का पालन ही न्याय के लिए पर्याप्त है, अथवा न्याय के लिए समान अवसर, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक गतिशीलता भी आवश्यक हैं। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास ने न्याय की अवधारणा को अधिक व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। समकालीन लोकतंत्र सार्वभौमिक मताधिकार, राजनीतिक समानता, मौलिक अधिकारों, विधि के शासन, स्वतंत्र न्यायपालिका तथा नागरिकों की शासन-प्रक्रिया में सहभागिता पर आधारित है। आधुनिक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण में राज्य की वैधता केवल शासकों के ज्ञान या नैतिकता से निर्धारित नहीं होती, बल्कि नागरिकों की सहमति, संवैधानिक मर्यादाओं और सत्ता के प्रति उत्तरदायित्व से भी जुड़ी होती है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक न्याय के अंतर्गत समान अवसर, भेदभाव का उन्मूलन, वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा तथा संसाधनों के न्यायसंगत वितरण जैसे प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। इन परिस्थितियों में प्लेटो के न्याय सिद्धांत का परीक्षण आवश्यक हो जाता है, क्योंकि उसकी सामाजिक श्रेणीबद्धता और दार्शनिक शासक की अवधारणा आधुनिक लोकतंत्र के समानता-आधारित स्वरूप से कई स्तरों पर भिन्न दिखाई देती है।

इसके बावजूद प्लेटो के विचारों की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक भ्रष्टाचार, सत्ता का निजी हितों के लिए उपयोग, लोकलुभावन निर्णय, प्रशासनिक अनैतिकता तथा जनकल्याण और राजनीतिक लाभ के बीच उत्पन्न होने वाले अंतर्विरोध न्यायपूर्ण शासन की गंभीर चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं के संदर्भ में प्लेटो का यह विचार महत्त्वपूर्ण है कि सार्वजनिक पद का उद्देश्य व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना नहीं, बल्कि समग्र समाज के हितों की रक्षा करना होना चाहिए। इसी प्रकार, शासन में ज्ञान, विवेक, शिक्षा और नैतिक उत्तरदायित्व की उनकी अवधारणाएँ लोकतांत्रिक संस्थाओं की गुणवत्ता को समझने में सहायक हैं। तथापि, इन आदर्शों की प्राप्ति के लिए केवल शासकों की नैतिक श्रेष्ठता पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है; इनके साथ पारदर्शिता, संस्थागत नियंत्रण, नागरिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक जवाबदेही भी आवश्यक हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्लेटो के न्याय सिद्धांत का अध्ययन इसी वैचारिक पृष्ठभूमि में किया गया है। इसमें उनके न्याय संबंधी मूल विचारों, आदर्श राज्य की अवधारणा और दार्शनिक शासक की भूमिका का विश्लेषण करते हुए आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनकी प्रासंगिकता का परीक्षण किया गया है। साथ ही, सामाजिक वर्गीकरण, राजनीतिक समानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जनसहभागिता और सत्ता की जवाबदेही के संदर्भ में इस सिद्धांत की सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य प्लेटो के विचारों को न तो पूर्णतः आदर्श मानकर स्वीकार करना है और न ही आधुनिक लोकतांत्रिक मान्यताओं से भिन्न होने के कारण उन्हें अप्रासंगिक घोषित करना, बल्कि उनके उपयोगी नैतिक तत्त्वों और सीमित राजनीतिक प्रस्तावों के बीच विवेकपूर्ण अंतर स्थापित करना है।

इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय प्रतिपाद्य यह है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र को नैतिक नेतृत्व, विवेकपूर्ण शासन, सार्वजनिक हित और संस्थागत समन्वय के संबंध में महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करता है। किंतु न्याय की आधुनिक अवधारणा को पूर्णता प्रदान करने के लिए इसे समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक समावेशन, संवैधानिकता और जनसहभागिता के सिद्धांतों के साथ समन्वित करना आवश्यक है। इसी आलोचनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से प्लेटो के न्याय सिद्धांत की समकालीन उपयोगिता तथा उसकी वैचारिक सीमाओं को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

शोध समस्या एवं अध्ययन का महत्त्व

प्रस्तुत शोध की मूल समस्या यह निर्धारित करना है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में किस सीमा तक उपयोगी है और किन आधारों पर उसकी आलोचना की जा सकती है। एक ओर यह सिद्धांत शासन में योग्यता, नैतिकता, अनुशासन और सार्वजनिक हित को महत्त्व देता है, वहीं दूसरी ओर इसकी सामाजिक श्रेणीबद्धता तथा सत्ता के केंद्रीकरण की प्रवृत्ति लोकतांत्रिक समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए प्रश्न उत्पन्न करती है।

प्रस्तुत अध्ययन का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि आधुनिक लोकतंत्रों में राजनीतिक भ्रष्टाचार, अवसरवाद, लोकलुभावन राजनीति, सामाजिक असमानता तथा जनहित और निजी हित के बीच संघर्ष जैसी समस्याएँ न्याय की अवधारणा को निरंतर प्रासंगिक बनाती हैं। प्लेटो के विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन इन समस्याओं के नैतिक और संस्थागत पक्षों को समझने में सहायता प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्लेटो के न्याय सिद्धांत की मूल अवधारणा और दार्शनिक आधार का विश्लेषण करना।
2. आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस सिद्धांत की प्रासंगिकता का परीक्षण करना।
3. प्लेटो के न्याय सिद्धांत की प्रमुख वैचारिक एवं व्यावहारिक सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
4. न्यायपूर्ण, उत्तरदायी और नैतिक लोकतांत्रिक शासन के निर्माण में प्लेटो के विचारों की उपयोगिता निर्धारित करना।

शोध प्रश्न

1. प्लेटो के अनुसार न्यायपूर्ण व्यक्ति और न्यायपूर्ण राज्य की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
2. आधुनिक लोकतंत्र में प्लेटो के न्याय सिद्धांत की उपयोगिता किन क्षेत्रों में दिखाई देती है?
3. क्या प्लेटो की शासन-संबंधी अवधारणाएँ स्वतंत्रता, समानता और जनसहभागिता जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप हैं?

परिकल्पना

प्लेटो का न्याय सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र में नैतिक नेतृत्व, सुशासन, योग्यता और सार्वजनिक हित को प्रोत्साहित करने में प्रासंगिक है, किंतु उसकी वर्ग-आधारित सामाजिक व्यवस्था तथा दार्शनिक शासक की अवधारणा को आधुनिक लोकतांत्रिक समानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जनसहभागिता के अनुरूप स्वीकार नहीं किया जा सकता।

शोध पद्धति एवं स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का प्रमुख आधार प्लेटो की कृति रिपब्लिक है, जिसमें न्याय, आदर्श राज्य, शिक्षा, राजनीतिक ज्ञान और शासन के स्वरूप पर विस्तार से विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त प्लेटो के राजनीतिक दर्शन पर उपलब्ध प्रामाणिक पुस्तकों तथा शोध-पत्रों का सहारा लिया गया है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के वैचारिक विश्लेषण और द्वितीयक स्रोतों के आलोचनात्मक परीक्षण के माध्यम से प्लेटो के न्याय सिद्धांत तथा आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच संबंध स्थापित किया गया है। यह एक सैद्धांतिक अध्ययन है; इसमें स्वतंत्र क्षेत्रीय सर्वेक्षण अथवा प्राथमिक सांख्यिकीय आँकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है।

साहित्य का पुनरावलोकन

प्लेटो के न्याय सिद्धांत पर उपलब्ध दार्शनिक साहित्य से स्पष्ट होता है कि न्याय की उनकी अवधारणा केवल सामाजिक अनुशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के नैतिक विकास और राज्य की राजनीतिक संरचना से भी जुड़ी हुई है :

प्लेटो की रिपब्लिक इस अध्ययन का प्रमुख मूल स्रोत है। इसमें सुकरात के माध्यम से न्याय की विभिन्न धारणाओं की समीक्षा करते हुए न्याय को व्यक्ति की आत्मा और राज्य के विभिन्न अंगों के समुचित सामंजस्य से जोड़ा गया है। एरिक ब्राउन द्वारा प्रस्तुत प्लेटो के नैतिक एवं राजनीतिक दर्शन संबंधी विश्लेषण में भी आत्मा के तीन भागों और राज्य की वर्ग-व्यवस्था के पारस्परिक संबंध को विशेष महत्त्व दिया गया है।

मैल्कम स्कोफील्ड की पुस्तक Plato: Political Philosophy में प्लेटो के लोकतंत्र-संबंधी विचारों, राजनीतिक ज्ञान, शिक्षा तथा आदर्श राज्य की अवधारणा का विवेचन मिलता है। यह अध्ययन प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचना के पीछे निहित राजनीतिक और नैतिक मान्यताओं को समझने में सहायक है।

गेरासिमोस सांतास के शोध-पत्र Plato's Criticisms of Democracy in the Republic में प्लेटो की आलोचनाओं के साथ-साथ उनके विचारों के उन पक्षों पर ध्यान दिया गया है, जो आधुनिक शासन में भी उपयोगी हो सकते हैं। विशेष रूप से सत्ता और संपत्ति के पृथक्करण, शासकों के ज्ञान तथा आर्थिक असमानता से संबंधित प्रश्नों का विवेचन उल्लेखनीय है।

इस साहित्य के समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत न तो आधुनिक लोकतंत्र का पूर्ण विकल्प है और न ही उसे केवल प्राचीन एवं अप्रासंगिक विचार मानकर अस्वीकार किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध इसी द्वंद्व को आधार बनाकर सिद्धांत की प्रासंगिकता और सीमाओं का समन्वित मूल्यांकन करता है।

प्लेटो के न्याय सिद्धांत का सैद्धांतिक आधार

1. **न्याय की अवधारणा -** प्लेटो ने रिपब्लिक के चौथे खंड में न्याय को ऐसी व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने उपयुक्त कार्य का निर्वहन करता है और दूसरों के कार्यक्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करता। इस अवधारणा का उद्देश्य समाज में विभिन्न भूमिकाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करना है। न्याय यहाँ केवल बाहरी नियमों का पालन नहीं, बल्कि व्यक्ति और राज्य

की आंतरिक सुव्यवस्था का भी प्रतीक है। प्लेटो ने न्याय को बुद्धि, साहस और संयम जैसे गुणों के साथ संबद्ध किया। उनके अनुसार, जब व्यक्ति के भीतर विवेक इच्छाओं पर उचित नियंत्रण रखता है और राज्य में विभिन्न वर्ग अपने दायित्वों का समुचित निर्वहन करते हैं, तब न्यायपूर्ण व्यवस्था का निर्माण होता है।

2. **व्यक्ति और राज्य के बीच संबंध -** प्लेटो ने व्यक्ति की आत्मा और राज्य की संरचना के बीच समानता स्थापित की। जिस प्रकार आत्मा में विवेक, उत्साह और इच्छाओं के विभिन्न पक्ष होते हैं, उसी प्रकार आदर्श राज्य में शासक, रक्षक और उत्पादक वर्गों की कल्पना की गई है। शासकों का कार्य विवेकपूर्ण निर्णय लेना, रक्षकों का कार्य सुरक्षा करना और उत्पादक वर्ग का कार्य आर्थिक एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इस व्यवस्था में न्याय का अर्थ सभी वर्गों के बीच समान कार्य-वितरण नहीं, बल्कि प्रत्येक वर्ग द्वारा अपने निर्धारित दायित्व का निर्वहन है। यही विशेषता प्लेटो के सिद्धांत को विशिष्ट बनाती है, लेकिन आधुनिक लोकतंत्र के समानता-आधारित दृष्टिकोण से उसके मतभेद का आधार भी बनती है।
3. **दार्शनिक शासक की अवधारणा -** प्लेटो के अनुसार, शासन का दायित्व ऐसे व्यक्तियों को सौंपा जाना चाहिए, जो सत्य, न्याय और परम कल्याण के स्वरूप को समझने की क्षमता रखते हों। दार्शनिक शासक व्यक्तिगत लाभ या लोकप्रियता के स्थान पर समग्र समाज के हित को प्राथमिकता देता है। इस दृष्टिकोण में राजनीतिक सत्ता और नैतिक ज्ञान का संबंध केंद्रीय स्थान रखता है। हालाँकि, आधुनिक लोकतंत्र में राजनीतिक अधिकार किसी विशेष दार्शनिक या अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं होते। इसलिए प्लेटो की अवधारणा को समकालीन संदर्भ में लागू करते समय ज्ञान-आधारित नेतृत्व और लोकतांत्रिक वैधता के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्लेटो के न्याय सिद्धांत की प्रासंगिकता

1. **नैतिक नेतृत्व और सुशासन -** प्लेटो का मानना था कि शासक का प्रमुख उद्देश्य व्यक्तिगत लाभ अर्जित करना नहीं, बल्कि राज्य और नागरिकों का कल्याण सुनिश्चित करना होना चाहिए। यह विचार आधुनिक लोकतंत्र में सार्वजनिक पदों की नैतिकता, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण तथा जनहितकारी नीतियों के निर्माण के लिए प्रासंगिक है। आज लोकतांत्रिक सरकारों की सफलता केवल चुनाव जीतने से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उनकी निर्णय-प्रक्रिया की निष्पक्षता, पारदर्शिता और जनकल्याण के प्रति प्रतिबद्धता भी महत्त्वपूर्ण होती है। इस दृष्टि से प्लेटो का न्याय सिद्धांत राजनीतिक नेतृत्व को नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है।
2. **योग्यता और राजनीतिक निर्णय -** प्लेटो ने शासन में ज्ञान और विवेक को विशेष महत्त्व दिया। आधुनिक लोकतंत्र में भी शिक्षा, प्रशासनिक दक्षता, विशेषज्ञता और तथ्यों पर आधारित निर्णय-प्रक्रिया सुशासन के आवश्यक तत्व हैं। आर्थिक नीति, पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञ सलाह का महत्त्व इसी आवश्यकता को रेखांकित करता है। हालाँकि, विशेषज्ञता का अर्थ नागरिकों की राजनीतिक भूमिका समाप्त करना नहीं है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विशेषज्ञ ज्ञान को निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही, सार्वजनिक विमर्श और संवैधानिक सीमाओं के साथ जोड़ना आवश्यक है।
3. **सामाजिक हित और संस्थागत समन्वय -** प्लेटो का न्याय सिद्धांत राज्य के विभिन्न अंगों के बीच सामंजस्य पर बल देता है। आधुनिक लोकतंत्र में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की निर्धारित भूमिकाएँ तथा उनके बीच संतुलन भी सुव्यवस्थित शासन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। यद्यपि इन संवैधानिक

संस्थाओं की संरचना प्लेटो की वर्ग-व्यवस्था से भिन्न है, फिर भी उनके कार्यों में समन्वय और अपने अधिकार-क्षेत्र का सम्मान न्यायपूर्ण शासन के लिए आवश्यक है।

4. **आर्थिक असमानता और सत्ता का संबंध -** प्लेटो ने आदर्श राज्य के शासक एवं रक्षक वर्गों के लिए संपत्ति और निजी स्वार्थ से संबंधित कठोर व्यवस्थाओं की कल्पना की थी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि शासक आर्थिक लाभ के लिए अपने अधिकारों का दुरुपयोग न करें। इस विचार को आधुनिक संदर्भ में हितों के टकराव, राजनीतिक वित्तपोषण में पारदर्शिता तथा सार्वजनिक पदों के निजी लाभ के लिए उपयोग पर नियंत्रण के रूप में समझा जा सकता है। यद्यपि प्लेटो की मूल व्यवस्था को आधुनिक लोकतंत्र में यथावत अपनाना संभव नहीं है, लेकिन सत्ता और निजी आर्थिक हितों के बीच संबंध की उनकी चिंता आज भी महत्त्वपूर्ण है।
5. **शिक्षा और नागरिक चेतना -** प्लेटो ने शिक्षा को विवेकपूर्ण व्यक्ति और न्यायपूर्ण राज्य के निर्माण का प्रमुख साधन माना। आधुनिक लोकतंत्र में भी नागरिक शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों की समझ, आलोचनात्मक चिंतन तथा राजनीतिक जागरूकता नागरिकों को सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं। इस प्रकार प्लेटो की शिक्षा संबंधी अवधारणा का लोकतांत्रिक महत्त्व इस बात में है कि शासन की गुणवत्ता केवल शासकों की क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि नागरिकों की विवेकशीलता और सार्वजनिक जीवन में उनकी सहभागिता पर भी निर्भर करती है।

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की प्रमुख सीमाएँ

1. **लोकतांत्रिक समानता के साथ अंतर्विरोध -** प्लेटो की आदर्श राज्य-व्यवस्था में समाज को विभिन्न कार्यों और क्षमताओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। इसमें सभी नागरिकों को राजनीतिक निर्णयों में समान भागीदारी का अधिकार नहीं मिलता। इसके विपरीत, आधुनिक लोकतंत्र राजनीतिक समानता और सार्वभौमिक नागरिक अधिकारों को मूलभूत महत्त्व देता है। इसलिए प्लेटो की व्यवस्था में कार्य-विभाजन को न्याय का आधार मानना उस समय समस्याग्रस्त हो जाता है, जब सामाजिक भूमिकाएँ स्थायी श्रेणियों का रूप ले लें और व्यक्ति की स्वतंत्र उन्नति के अवसर सीमित हो जाएँ।
2. **सत्ता का केंद्रीकरण -** दार्शनिक शासक की अवधारणा में यह मान लिया गया है कि ज्ञानवान और विवेकशील शासक उचित निर्णय लेकर समाज का कल्याण कर सकता है। लेकिन किसी शासक के ज्ञान या नैतिकता का दावा अपने आप में उसके निष्पक्ष होने की गारंटी नहीं है। सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण निर्णयों की आलोचना, नागरिक नियंत्रण और संस्थागत उत्तरदायित्व को कमजोर कर सकता है। आधुनिक लोकतंत्र में इस समस्या का समाधान स्वतंत्र न्यायपालिका, विधि के शासन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, नियमित चुनाव और सत्ता पर संस्थागत नियंत्रण के माध्यम से खोजा जाता है।
3. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सीमित स्वीकृति -** प्लेटो के आदर्श राज्य में सामूहिक व्यवस्था और राज्य की एकता को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। शिक्षा, सामाजिक भूमिकाओं और सांस्कृतिक जीवन पर राज्य का व्यापक नियंत्रण इस व्यवस्था की विशेषता है। इसके विपरीत, आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतंत्रता, विचारों की विविधता, निजता और जीवन-पद्धति चुनने के अधिकार को महत्त्व दिया जाता है। इस दृष्टि से प्लेटो का सिद्धांत सामूहिक कल्याण की रक्षा करते हुए भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए पर्याप्त संस्थागत सुरक्षा प्रदान नहीं करता।
4. **न्याय की संकीर्ण सामाजिक अवधारणा -** प्लेटो का न्याय मुख्यतः सामाजिक सामंजस्य और निर्धारित कार्यों के समुचित निर्वहन पर आधारित है। आधुनिक सामाजिक न्याय की अवधारणा इससे व्यापक है। इसमें समान अवसर, संसाधनों का न्यायसंगत वितरण, वंचित समूहों के अधिकार और सामाजिक भेदभाव

के उन्मूलन जैसे प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इसलिए केवल यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक व्यक्ति अपना निर्धारित कार्य करे, तब तक पर्याप्त नहीं है, जब तक यह भी न देखा जाए कि सामाजिक अवसरों और संसाधनों का वितरण न्यायपूर्ण है या नहीं।

5. **व्यावहारिकता और जवाबदेही की समस्या -** प्लेटो की आदर्श व्यवस्था में यह अपेक्षा की गई है कि ज्ञानवान शासक सार्वजनिक हित को प्राथमिकता देगा। लेकिन व्यवहार में यह निर्धारित करना कठिन है कि वास्तविक राजनीतिक जीवन में कौन व्यक्ति सर्वोच्च ज्ञान और नैतिकता का अधिकारी है। यदि इस निर्णय का अधिकार स्वयं शासकों के पास हो, तो सत्ता की वैधता और निष्पक्षता पर प्रश्न उठ सकते हैं। आधुनिक लोकतंत्र में राजनीतिक वैधता केवल शासक की योग्यता पर आधारित नहीं होती; वह नागरिकों की सहमति, संवैधानिक नियमों और जवाबदेही से भी निर्धारित होती है। यही कारण है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत नैतिक दिशा तो प्रदान करता है, परंतु आधुनिक लोकतांत्रिक शासन के लिए अपने आप में पर्याप्त संस्थागत मॉडल नहीं बन पाता।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

प्लेटो के न्याय सिद्धांत का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते समय उसके नैतिक आदर्शों और राजनीतिक संस्थागत प्रस्तावों के बीच अंतर करना आवश्यक है। नैतिक आदर्शों के स्तर पर प्लेटो का यह आग्रह कि सत्ता का प्रयोग निजी लाभ के बजाय सार्वजनिक हित के लिए होना चाहिए, आधुनिक लोकतंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार, राजनीतिक निर्णयों में ज्ञान, विवेक और दूरदर्शिता की आवश्यकता से भी इनकार नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, राजनीतिक संस्थाओं के स्तर पर प्लेटो की व्यवस्था अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है। यदि न्याय का निर्धारण केवल शासक वर्ग के विवेक पर छोड़ दिया जाए, तो नागरिकों की स्वतंत्रता और समानता प्रभावित हो सकती है। आधुनिक लोकतंत्र इस समस्या का समाधान किसी एक वर्ग की नैतिक श्रेष्ठता में नहीं, बल्कि संविधान, विधि के शासन, नागरिक अधिकारों और जवाबदेह संस्थाओं में खोजता है।

इस संदर्भ में प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचना को पूर्णतः अस्वीकार करने के बजाय उसके मूल प्रश्नों पर विचार करना अधिक उपयोगी है। क्या लोकप्रियता हमेशा राजनीतिक योग्यता का प्रमाण है? क्या बहुमत का निर्णय अपने आप में न्यायपूर्ण होता है? क्या निर्वाचित प्रतिनिधियों का निजी हित सार्वजनिक हित से ऊपर हो सकता है? ये प्रश्न आज भी लोकतांत्रिक राजनीति के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। फिर भी, इन समस्याओं का समाधान लोकतांत्रिक सहभागिता समाप्त करके नहीं, बल्कि उसे अधिक विवेकपूर्ण, समावेशी और उत्तरदायी बनाकर किया जाना चाहिए। प्लेटो के विचारों की यही आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या उन्हें आधुनिक राजनीतिक चिंतन में प्रासंगिक बनाए रखती है।

प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :

1. प्लेटो ने न्याय को व्यक्ति की नैतिक सुव्यवस्था तथा राज्य के विभिन्न अंगों के बीच सामंजस्य के रूप में प्रस्तुत किया। इस दृष्टिकोण में न्याय केवल कानूनी व्यवस्था नहीं, बल्कि नैतिक और राजनीतिक जीवन का आधार है।
2. प्लेटो का न्याय सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र में नैतिक नेतृत्व, राजनीतिक योग्यता, सार्वजनिक हित, संस्थागत समन्वय और शिक्षा के महत्त्व को समझने में उपयोगी है।
3. सत्ता और निजी आर्थिक हितों के बीच टकराव को लेकर प्लेटो की चिंता आधुनिक लोकतांत्रिक शासन में पारदर्शिता तथा भ्रष्टाचार-नियंत्रण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

4. प्लेटो की वर्ग-आधारित व्यवस्था तथा दार्शनिक शासक की अवधारणा आधुनिक लोकतंत्र के राजनीतिक समानता, सार्वभौमिक नागरिक अधिकार और जनसहभागिता के सिद्धांतों के साथ पूर्णतः संगत नहीं है।
5. प्लेटो का न्याय सिद्धांत सामाजिक सामंजस्य पर पर्याप्त बल देता है, लेकिन आधुनिक सामाजिक न्याय की व्यापक आवश्यकताओं–विशेषकर समान अवसर, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और वंचित समूहों के अधिकारों–को पूरा करने के लिए इसमें संशोधन आवश्यक है।
6. समग्रतः अध्ययन की मुख्य परिकल्पना पुष्ट होती है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत नैतिक एवं उत्तरदायी शासन के लिए प्रासंगिक है, किंतु आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए उसे संवैधानिकता, समानता, स्वतंत्रता और जनसहभागिता के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित करना आवश्यक है।

सुझाव

- राजनीतिक नेतृत्व में नैतिकता, योग्यता, पारदर्शिता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- लोकतांत्रिक संस्थाओं में विशेषज्ञ ज्ञान का उपयोग नागरिकों की सहभागिता तथा निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही के साथ किया जाना चाहिए।
- सत्ता के दुरुपयोग और निजी हितों के टकराव को रोकने के लिए स्वतंत्र संस्थागत निगरानी तथा पारदर्शी निर्णय-प्रक्रिया को मजबूत किया जाना चाहिए।
- नागरिक शिक्षा के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों, विवेकपूर्ण राजनीतिक सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- न्याय की अवधारणा को केवल सामाजिक व्यवस्था तक सीमित न रखकर समान अवसर, नागरिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के अधिकारों से भी जोड़ा जाना चाहिए।

प्लेटो का न्याय सिद्धांत राजनीतिक दर्शन की उन महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं में से है, जो राज्य, व्यक्ति और नैतिकता के संबंधों पर गंभीर चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। उन्होंने न्याय को केवल कानून के पालन अथवा दंड की व्यवस्था के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे सुव्यवस्थित व्यक्ति और आदर्श राज्य की आधारशिला माना। उनका यह आग्रह कि राजनीतिक सत्ता का उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण होना चाहिए तथा शासन ज्ञान और नैतिकता पर आधारित होना चाहिए, आज भी सार्थक है। फिर भी, प्लेटो की आदर्श राज्य-व्यवस्था आधुनिक लोकतंत्र की आवश्यकताओं का पूर्ण उत्तर नहीं देती। उसकी वर्ग-आधारित संरचना, सीमित जनसहभागिता और सत्ता के केंद्रीकरण की प्रवृत्ति समानता, स्वतंत्रता तथा संवैधानिक उत्तरदायित्व की लोकतांत्रिक मान्यताओं से टकराती है। इसलिए प्लेटो के न्याय सिद्धांत को आधुनिक व्यवस्था में यथावत लागू करने के बजाय उसके नैतिक आदर्शों को लोकतांत्रिक संस्थाओं और नागरिक अधिकारों के साथ समन्वित करना अधिक उचित है।

अंततः कहा जा सकता है कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र का विकल्प नहीं, बल्कि उसके नैतिक और वैचारिक मूल्यांकन का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। उसकी स्थायी प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि वह लोकतंत्र को केवल सत्ता प्राप्त करने की प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण, विवेकशील और जनकल्याणकारी शासन की व्यवस्था के रूप में देखने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ब्राउन, ई. (2017). प्लेटो की रिपब्लिक में नैतिकता और राजनीति, ई. एन. ज़ाल्टा (संपा.), स्टैनफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी (संस्करण: शरद 2017), मेटाफिजिक्स रिसर्च लैब, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय।

2. क्राउट, आर. (2018)। लोकतंत्र के विरुद्ध प्लेटो: एक पक्षसमर्थन, वर्च्यू, हैप्पीनेस, नॉलेज: गेल फाइन और टेरेंस इरविन के कार्यों से संबंधित विषय ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 77।
3. प्लेटो, (1992), रिपब्लिक (जी. एम. ए. ग्रूबे, अनुवादक; सी. डी. सी. रीव, संशोधक), हैकेट पब्लिशिंग कंपनी।
4. सांतास, जी. (2007), रिपब्लिक में प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाएँ, सोशल फिलॉसफी एंड पॉलिसी, 24(2), पृ. 70।
5. स्कोफील्ड, एम. (2006), प्लेटो: राजनीतिक दर्शन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. सैक्सनहाउस, ए. डब्ल्यू. (2015), प्लेटो की रिपब्लिक के आठवें खंड में लोकतंत्र, समानता और प्रजातियाँ, अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू।
7. एनस, जे. (1981), प्लेटो की रिपब्लिक का परिचय, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. रीव, सी. डी. सी. (1988), दार्शनिक सम्राट: प्लेटो की रिपब्लिक का तर्क, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. पॉप्पर, के. आर. (1945), खुला समाज और उसके शत्रु: खंड 1–प्लेटो का प्रभाव, रूटलेज एंड केगन पॉल।
10. क्रॉस, आर. सी., एवं वूज़ली, ए. डी. (1964)। प्लेटो की रिपब्लिक: एक दार्शनिक भाष्य, सेंट मार्टिन्स प्रेस।
11. व्हाइट, एन. पी. (1979), प्लेटो की रिपब्लिक का सहचर, हैकेट पब्लिशिंग कंपनी।
12. क्राउट, आर. (संपा.) (1997), प्लेटो की रिपब्लिक: आलोचनात्मक निबंध, रोमन एंड लिटिलफील्ड पब्लिशर्स।
13. सांतास, जी. (संपा.) (2006), प्लेटो की रिपब्लिक के लिए ब्लैकवेल मार्गदर्शिका, ब्लैकवेल पब्लिशिंग।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM